

27-02-2024





## Fiji farmers arrive at NSI on study tour

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

An 18-member delegation of progressive sugarcane farmers led by Sunil Chaudhary, General Manager (Operations), Sugarcane Grower Council from Fiji arrived at the National Sugar Institute (NSI) on their two-week study tour to see and discuss latest efficient techniques adopted in India for sugarcane cultivation and sugar production. The team will stay at NSI for a few days to view the farm, experimental sugar factory and ethanol plant operations with respect to innovative measures taken to improve the productivity from farm to factory.

The visit has been organised by the institute on the request of Sugarcane Grower Council, Fiji, through Ministry



of External Affairs, Government of India. Sugarcane is one of the most significant crops cultivated in Fiji and for over a century has shaped the development of the country's economy. However, for the past 20 years, both sugarcane and sugar production has declined steadily, by approximately 50 per cent. Decreasing profits from sugar-

are going to provide them theoretical and practical exposure on varietal development, seed treatment, planting techniques, irrigation practices, disease and pest management, farm mechanisation and importantly about the use of Information Technology on harvesting the sugarcane at optimum maturity and minimising cut to crush delay. The director informed that exposure will also be given to them about the latest trend in processing to produce superior quality sugar and utilisation of by-products for making value-added products.

After the ceremonial welcome and address of Prof Mohan, Director, presentation about the institute activities was given by Prof D Swain, Professor Sugar Engineering,

Dr Seema Paroha, Prof Biochemistry and Dr Ashok Kumar, Assistant Prof. Agriculture Chemistry conducted interactive sessions on sugar-ethanol scenario and on various aspects of sugarcane farming respectively.

After completing exposure visit of NSI its experts will accompany the delegation to various commercial sugar factories, institute involved in developing new sugarcane varieties and to the works of machinery manufacturers. The delegation will also interact with the Indian progressive farmers to know the ground realities with respect to measures taken for improving the crop yield with minimum inputs of irrigation water, fertilisers, insecticides and pesticides.



## एनएसआई फिजी शुगर इंस्ट्री की माली हालत सुधरेगा

ગીતીયાએ | કાનપર

फिरी से जग उत्तमपाल परिवर्त के महाभास्कर (संकाय) नुमाई पोरी के बैठक से और गणधरीनी नाम चिनाओं का 18 सदस्यीय प्रतिनिधित्वकालीन भारत में जो कि द्वारा उत्तमपाल आगे बढ़ायी गयी लोकतान्त्रिक युवती के बोले और अब वक्त के लिए आगे भी साथा के अवसर देते रह राष्ट्रीय शक्ति संरक्षण, कामपुर्त पहुंचा। योंती और योंती उत्तमपाल योंती जो कि कार्यकालीन तक उत्तमपाल का नाम है कि लिए आज यहाँ उपर्याप्त के संबंध में स्वरूप के फार्म, प्रतिनिधित्व की कार्यालयों और द्विवेशीय संघर्ष के संबंधों को लेकर वे लिए दीम कुछ लिए कि एवं राष्ट्रीय शक्ति संरक्षण, कामपुर्त में रहती। यह योगा भारत उत्तमपाल के द्वितीय भागान्तराल यात्रा के जगत् उत्तमपाल परिवर्त, जिसके अनुभूति पर उत्तमपाल द्वारा आयोगीति वै गई है। जग उत्तमपाल में योंती की जगत् वाली स्वतंत्र समर्पणीय परायानों की से यह कै और एक लड़ी से भी अधिक तमाम या से इन्हें कौन की अवश्यकतावाला के लियाकार को अवश्यक है। 18 सदस्यी, विचलन 20 वर्षों से, जग उत्तमपाल दोनों के उत्तमपाल के लियाकार एवं उत्तमपाल 50 वर्ष की विशेषता आती है। विभेदों परोक्षत बहें उत्तमपाल से क्या कहें, कोटी, कटाई और परिवर्तन लाताव के साथ-साथ जग उत्तमपालता और विषय पक्ष के लोकतान्त्रिक या सेवक के कामान जग के उत्तमपाल में कर्मी के कर्मकालीनीयता विद्यमान रिचार्ड बहु द्वारा है। इन उत्तमी लोकों को दियाकर उत्तमपाल के द्वितीय भागान्तराल में संरक्षण के लिए भारतीय विद्यमानों, संरक्षणों एवं उत्तम योगदान द्वारा आयोगीति वै गई है। उत्तमपाल

विभिन्न प्रकार के विभिन्न रोपण तकनीक, स्लिंगर्स और कीट प्रबन्धन, जूखि पर टैक्सिटिक और व्याप्त जानकारी प्रदान करने पर नवतत्वपूर्ण रूप से उभयं पर गहरी की बढ़ावा देती है। कीटों की कठारी करने के सूखना प्रोटोकॉलों के उपर जानकारी प्रदान करती है। बदाया कि बैहाकी गुणवत्ता का उच्चानन्द करने के लिए

ज्ञान यथा वासने के लिए सह-उपयोग के उपरांत वे कर्तव्य में भी अकेले जाकरकी रै आजी वास्तविकताएं रखता और विशेष प्रोफेशन बोनस के लिए बोनस के बारे, प्रोफेशन ली. रोल, प्रोफेशन वाला अंदरूनी द्वारा संस्थापित की गणितशास्त्रीयों के बारे में प्रत्युषता दी गई। इसी रीतानि पठता, प्रोफेशन वाला अंदरूनी और अंते, अमरा कुमार, रामाचारण प्रोफेशन, विश्व विद्यालय जिनमें ज्ञान वास्तविकताएं प्रतिष्ठित और अंत वे की ओर से विशेष प्रबुद्धियों पर निर्भएं।

राष्ट्रीय शक्ति संस्कार का प्रकाशपत्र द्वारा पूरा करने के बाद, संस्कार के विवेकानन्द प्रतिष्ठान द्वारा यह एक विशेष विभाग बनाया गया। इसका उद्देश्य विशेष विज्ञानी वीची कारबाही, नई जगत कल्पनों के विकास में लाभिक संस्कारों को विस्तारित करना था। इसकी अधिकारियों को निम्नांकित की दीरा करते। विशेषजट मिशन द्वारा दिया गया कारबाही के विवरणों को न्यूटनियम के बारे में सुनाया गया। इसके बाद विशेषजट के सभी कारबाही ने अपनी में सुनाया गया। इसे एक विवरण में जीवनशास्त्र विज्ञानों के दिए गये विवरणों के बारे में सुनाया गया।

फिजी का 18  
सदरुद्य दल एन  
एसआई कैंपस  
पहुंचा



गन्ने की पैदावार और तकनीकी गुरु  
सीखेंगा फिजी का प्रतिनिधि मंडल



वार्ता करते निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन व फिजी का प्रतिनिधि मंडल।

कानपुर, 26 फरवरी। फिजी से गत्रा उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक सूनील चौधरी के नेतृत्व में प्रौद्योगिक गत्रा किसानों का 18 सप्तरीय प्रतिनिधि मंडल भारत में गते केत्रपादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशलतकनीकों को देखने और चर्चा के लिए दो सप्ताह के अध्ययन द्वार पर राष्ट्रीय शक्ति संस्थान पहुंचा। गत्रा की खेती और चौधरी उत्पादक यारी खेत से कारबाहन तक उत्पादन तांत्र और सुधार के लिए उठाये गये नवीन उत्पादों के संबंध में संस्थान के फारम प्रयोगकारी चौंकी करवाने और इंटर्नल संवेदन के सम्बाल

- अयोध्या में श्रीराम का भव्य मंदिर के दर्शन करेंगे फिजी से आये सदस्य

किये के विकास, मरीनी नियमों का दौरा करेंगे। प्रतिनिधि मंडल सिचाई के लिए उत्तरी और कोटाकारों के न्युनमंडल इनपुट के साथ फसल सुधार के लिए किये गये उत्पादों के संबंध में जीमोनी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्राप्तिशक्ति किसान के साथ जीवांशु भी करेंगे। वार्ता के दौरान फिजो से अपेक्षित रिपोर्ट, गजेट और प्रमिला देवी, अनीश नारायण आदि भी दर्श रहे।

# 18 सदस्यीय प्रतिमंडल राष्ट्रीय शर्करा संस्थान पहुंची

दैनिक देश मोर्चा संवाददाता  
मनी चर्चा

कानपुर-फिजी से गता उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेहरू टॉप में प्रगतिशील गता किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गते के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सप्ताह के अध्ययन दौरे पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर पहुंचा खेती और चीनी उत्पादन यात्रा खेत से कारखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उड़ाए गए नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चौनी कारखाने और इथेनील संबंध के संचालन को देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में रुकी ही यह यात्रा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गता उत्पादक परिषद, फिजी के अनुरोध पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है गता फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक सदी से भी अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास को आकार दिया है हालांकि, पिछले 20 वर्षों से गता और चीनी दोनों के उत्पादन में लगातार लगभग 50% की गिरावट आई है निवेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि खेती, कटाई और परिवहन लागत



के साथ-साथ कम उत्पादकता और भूमि पढ़ों के नवीनीकरण न होने के कारण गते के उत्पादन में कमी के कारण फिजी में वर्तमान स्थिति पैदा हुई है हम उन्हें चीनी उद्योग को टिकाक बनाने के लिए भारतीय किसानों, संस्थानों और उद्योग द्वारा किए गए कार्यों को दिखाने जा रहे हैं हम उन्हें देशी में कटाई को कम करने के बारे में सूचना प्रायोगिकी के उपयोग पर जानकारी प्रदान करेंगे निवेशक ने विभिन्न प्रकार के विकास, बीज उपचार, रोपण तकनीक, सिंचाई

प्रथाओं, रोग और कीट प्रबंधन, कृषि मशीनेकरण पर सेंडॉर्टिक और व्यावहारिक जानकारी प्रदान करने जा रहे हैं और महत्वपूर्ण रूप से उचित परिपक्वता पर नज़र की कटाई और पराई देशी में कटाई को कम करने के बारे में सूचना प्रायोगिकी के उपयोग पर जानकारी प्रदान करेंगे निवेशक ने बताया कि बेतार गुणवत्ता वाली चीनी का उत्पादन करने के लिए प्रस्तुकरण में शामिल संस्थानों, मशीनरी निर्माताओं का दौरा करेंगे प्रतिनिधि मंडल सिंचाई के पारी, उर्वरकों और कौटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ फसल की उपज में सुधार के लिए किए गए उपायों के संबंध में जमीनी हक्कीकत जानने के लिए भारतीय प्रायोगिकी किसानों के साथ भी बातचीत करेंगा

नवीनतम तकनीक और

मूल्य वर्तित उत्पाद बाजार

के लिए सह-उत्पादों के उत्पादन के बारे में भी उन्हें जानकारी दी जाएगी

औपचारिक स्वागत और निवेशक प्रोफेसर मोहन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डॉ. स्वैन, प्रोफेसर शुगर

इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी गई डॉ. सीमा

परोहा, प्रोफेसर बायोकैमिस्ट्री और डॉ.

अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि रसायन विज्ञान ने क्रमशः चीनी-

इथेनील परिदृश्य और गते की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटीविटव सत्र आयोजित किए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का

एक्सपोजर दौरा पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न वायिजिक

चीनी कारखानों, नई गता किसानों के विकास में शामिल संस्थानों, मशीनरी निर्माताओं का दौरा करेंगे प्रतिनिधि

मंडल सिंचाई के पारी, उर्वरकों और कौटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ

फसल की उपज में सुधार के लिए किए गए उपायों के संबंध में जमीनी हक्कीकत जानने के लिए भारतीय प्रायोगिकी किसानों के साथ भी बातचीत करेंगा

## फिजी की 18 सदस्य टीम पहुंची शर्करा संस्थान, कार्यशाला में लेंगे भाग



नगराज दर्पण समाचार

कानपुर। फिजी से गता उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेहरू टॉप में प्रगतिशील गता किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गते के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सप्ताह के अध्ययन दौरे पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान पहुंचा। खेती और चीनी उत्पादन यानी खेत में कारखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उड़ाए गए नवीन उपायों के अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास को आकार दिया।

संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चौनी कारखाने और इथेनील संबंध के संचालन को देखने के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में लेंगे। यह यात्रा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गता उत्पादक परिषद, फिजी के अनुरोध पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है। गता फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक सदी से भी अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास को आकार दिया।

गिरावट आई है।

निवेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि खेती, कटाई और परिवहन लागत के साथ-साथ कम उत्पादकता और भूमि पढ़ों के नवीनीकरण न होने के कारण गते के उत्पादन में कमी के कारण फिजी में वर्तमान स्थिति पैदा हुई है औपचारिक स्वागत और निवेशक प्रोफेसर मोहन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डॉ. स्वैन, प्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी गई। डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बायोकैमिस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि रसायन विज्ञान ने क्रमशः चीनी-इथेनील परिदृश्य और गते की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटीविटव सत्र आयोजित किए। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का एक्सपोजर दौरा पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधि मंडल सिंचाई के पारी, उर्वरकों और कौटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ फसल की उपज में सुधार के लिए किए गए उपायों के संबंध में जमीनी हक्कीकत जानने के लिए भारतीय प्रायोगिकी किसानों के साथ भी बातचीत करेंगा।

# फिजी के गन्ना उत्पादक राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में जानेंगे नई तकनीकी



कानपुर (नगर छाया समाचार)। फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महानवीकरक (संसाधन) मूलत चौधरी के नेतृत्व में प्रतिनिधित्व गवा किसानों का 18 सदनवीय प्रतिनिधित्वमंडल भारत में गन्ने के उत्पादक के लिए उपचार जाने वाली नवीनतम कृषित तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सभाह के अध्ययन दीर्घी पर गटाई लगाई संस्थान, कानपुर पहुंचा। योगी और चौदो उत्पादन यानी खेत से कारबखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उत्तर गए। नवीन उपचारों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्राकृतिक चौदो कारबखाने और इवेनॉल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए टीम कूछ दिनों के लिए गण्डीय शक्ति संस्थान, कानपुर पहुंचा।

गन्ना याज भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गन्ना उत्पादक परिषद, फिजी के अनुनाद पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है। गन्ना फिजी में योगी जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक मटी से भी अधिक समय से इसने देश की अधिकारक संघर्ष के लिए अपेक्षित उपचार किसान को आकर दिया है। हालांकि,

पिछले 20 वर्षों से, गन्ना और चौदो योगों के उत्पादन में लगातार लगातार 50% की वृद्धि आई है। निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र महान ने कहा कि योगी, कूटाई और परिवहन लागत के साथ-साथ का उत्पादकता और भूमि पहुंच के नवीनीकरण को लेने के कारण योगों के उत्पादन में कटौती के कारण फिजी में बदलाव दिया हुआ है।

इम उह चौदो योगों को टिकाऊ बनाने के लिए भारतीय किसानों, संस्थानों और उद्योग द्वारा किए गए कारों को दियाने जा रहे हैं। हम उद्योग विभिन्न प्रकार के विद्युत्य प्रयोगों, रोग और कॉट प्रबलन, कॉर्ट मरीनोक्सान पर मैटारिक और ल्योवालिक जानकारी प्रदान करने जा रहे हैं और महत्वपूर्ण खाल से उचित परिवर्तन पर गन्ने की कटौती और पेशा देश की कटौती को कम करने के बारे में बदलाव प्राप्त करें। निदेशक कारबखाने के विदेश के बेहतर गुणवत्ता वाली चौदो का उत्पादन करने के लिए प्रसक्करा में नवीनतम तकनीक और मूल्य व्याप्रित उत्पाद-

बनाने के लिए सह-उत्पादों के उपयोग के बारे में भी उह जानकारी दी जाएगी।

औपचालिक स्वाक्षर, और निदेशक प्रोफेसर मोलन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डॉ. स्वैन, प्रोफेसर शुभर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रत्युति दी गई। डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बालोनीमस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कौशिक संस्थान विज्ञान ने क्रमशः चौदो-इवेनॉल परिदृश्य और गन्ने की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटरव्यू बातचीत सत्र आयोजित किए।

गण्डीय शक्ति संस्थान का एकमात्र दीर्घ पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न विद्युत्यक चौदो जानकारी, नई गन्ने किसानों के विकास में जापित सम्बन्ध, मौलिनी नियमिताओं का दृष्टा करें। प्रतिनिधिमंडल सिद्धांत के पानी, उर्दूकों और कीटनाशकों के नवीनतम इन्सूक्ट के साथ फसल को उत्तर में सुधार के लिए विद्युत गण्डीय उपचारों के संबंध में जापीनी होकर जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसानों के साथ बातचीत भी करेंगे।

# फिजी के गन्ना उत्पादक राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में जानेंगे नई तकनीकी



कानपुर (नगर छाया समाचार)। फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महानवीकरक (संसाधन) मूलत चौधरी के नेतृत्व में प्रतिनिधित्व गवा किसानों का 18 सदनवीय प्रतिनिधित्वमंडल भारत में गन्ने के उत्पादक के लिए उपचार जाने वाली नवीनतम कृषित तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सभाह के अध्ययन दीर्घी पर गटाई लगाई संस्थान, कानपुर पहुंचा। योगी और चौदो उत्पादन यानी खेत से कारबखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उत्तर गए। नवीन उपचारों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्राकृतिक चौदो कारबखाने और इवेनॉल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए गण्डीय शक्ति संस्थान, कानपुर पहुंचा।

गन्ना याज भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गन्ना उत्पादक परिषद, फिजी के अनुनाद पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है। गन्ना फिजी में योगी को जाने वाली महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक मटी से भी अधिक समय से इसने देश की अधिकारक संघर्ष के लिए अपेक्षित उपचार के विदेश को आकर दिया है। हालांकि,

पिछले 20 वर्षों से, गन्ना और चौदो योगों के उत्पादन में लगातार लगातार 50% की वृद्धि आई है। निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र महान ने कहा कि योगी, कूटाई और प्रोफेसर मोलन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डॉ. स्वैन, प्रोफेसर शुभर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रत्युति दी गई। डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बालोनीमस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कौशिक संस्थान विज्ञान ने क्रमशः चौदो-इवेनॉल परिदृश्य और गन्ने की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटरव्यू बातचीत सत्र आयोजित किए।

गण्डीय शक्ति संस्थान का एकमात्र दीर्घ पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न विद्युत्यक चौदो जानकारी, नई गन्ने किसानों के विकास में जापित सम्बन्ध, मौलिनी नियमिताओं का दृष्टा करें। प्रतिनिधिमंडल सिद्धांत के पानी, उर्दूकों और कीटनाशकों के नवीनतम इन्सूक्ट के साथ फसल की उत्तर में सुधार के लिए विद्युत गण्डीय उपचारों के संबंध में जापीनी होकर जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसानों के साथ बातचीत भी करेंगे।

## राष्ट्रीय शक्ति संस्थान प्रतिनिधिमंडल पहुंचा कानपुर

दैनिक तस्वीर आजकल

**कानपुर।** फिजी से गशा उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रगतिशील गशा किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गशे के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सप्ताह के अध्ययन दौरे पर गार्डीय शक्ति संस्थान कानपुर पहुंचा खेती और चीनी उत्पादन यानी खेत से कारखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उदाए गए नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चीनी कारखाने और इथेनोल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय शक्ति संस्थान, कानपुर में रुकी यह यात्रा



भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गशा उत्पादक परिषद, फिजी के अनुरोध पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है। गशा फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक सदी से भी अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास के आकार दिया है हालांकि, पिछले 20 वर्षों से गशा और उत्पादन द्वारा किए गए कार्यों के देखाने के लिए टीम बहुत दिनों के लिए राष्ट्रीय शक्ति संस्थान, लगातार लगभग 500 की गिरावट आई।

रोपण तकनीक, सिंचाई प्रयासों, बायोकैमिस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि मशीनीकण्ठ पर सिद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञानविद्या प्रदान करने जा रहे हैं और महत्वपूर्ण रूप से अधिक परिषकता पर गशे की कटाई और पेशाई देशी में कटीती को कम करने के बारे में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जानकारी प्रदान करेंगे निदेशक ने बताया कि बेहतर गुणवत्ता वाली चीनी का उत्पादन करने के लिए प्रसंस्करण में नवीनतम तकनीक और मूल्य व्यवस्था उत्पादन करने के लिए, सह-उत्पादन के उपयोग के बारे में भी उन्हें जानकारी दी जाएगी। उत्पादन के लिए भारतीय शक्ति संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रत्युत्ती दी गई डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर

## 18 सदस्यीय फिजी टीम आई एन, एस, आई 15 दिन तक कार्यशाला में करेगी प्रतिभाग

**संबाददाता/अरुण जोशी**  
**कानपुर।** फिजी से गशा उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रगतिशील गशा किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गशे के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सप्ताह के अध्ययन दौरे पर गार्डीय शक्ति संस्थान, पहुंचा। खेती और चीनी उत्पादन यानी खेत से कारखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उदाए गए नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चीनी कारखाने और इथेनोल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय शक्ति संस्थान, में

रुकेगी। यह यात्रा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गशा उत्पादक परिषद, फिजी के अनुरोध पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है। गशा फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक सदी से भी अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास को आकार दिया है। हालांकि, पिछले 20 वर्षों से, गशा और चीनी दोनों के उत्पादन में लगातार लगभग 50% की गिरावट आई है। निदेशक ग्रोफेसर नेंद्र मोहन ने कहा कि खेती, कटाई और परिवहन लगात के साथ-साथ कम उत्पादकता और भूमि पट्टों के नवीनीकरण न होने के कारण गशे के उत्पादन में वर्तमान स्थिति बहुत हुई है। हम उन्हें चीनी उत्पादन को टिकाक करने के लिए भारतीय विकास और संस्थान के विकास में शामिल होना चाहिए। उत्पादन के लिए गए उपायों के संबंध में जानी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसानों के साथ भी बातचीत करेगा।



पैदा हुई है औपचारिक स्वागत और निदेशक ग्रोफेसर मोहन के संबोधन के बाद, ग्रोफेसर डॉ. स्वैन, ग्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रत्युत्ती दी गई। डॉ. सीमा परोहा, ग्रोफेसर बायोकैमिस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि रसायन विज्ञान ने क्रमशः चीनी-इथेनोल परिदृश्य और गशे की खेती के विभिन्न पहलओं पर इंटरेक्टिव सत्र आयोजित किए। राष्ट्रीय शक्ति संस्थान का एक्सपोजर द्वारा पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न व्यापारिक चीनी कारखानों, नई गशा किसानों के विकास में शामिल संस्थानों, मशीनरी नियंत्रिताओं का दौरा करेंगे प्रतिनिधिमंडल सिंचाई के पानी, उवरकों और कीटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ फसल की उपज में सुधार के लिए किए गए उपायों के संबंध में जानी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसानों के साथ भी बातचीत करेगा।

गन्ना किसानों का प्रतिनिधि मंडल  
अध्ययन के लिए पहुंचा शर्करा संस्थान

३४८

**कालापूर्ण।** यिनी से गया उत्तराद्वारा परामर्श वाली समाजसंवर्धक (संसाधन) सूखी वर्षों की बेस्ती में प्रगतिशील गया विचारणा का एक सदरमुख प्रतिक्रिया दर्शाता है। भारत में गंगा के उत्तराद्वारा के लिये अप्रत्यक्ष और यात्री वाहनों का उत्तराद्वारा एक प्रबल, विभिन्न प्रश्नों, ये विभिन्न विद्युतिक और अधिकारिक जनसमाज के विविध वर्षों की बेस्ती की एक समाजपूर्ण विचारणा में जगती परिवर्तन एवं यह की कठोरता और गंगा एवं मृतकाली को बहु बढ़ावे के साथ में सभी प्रभावीयों को बहु बढ़ावे के साथ



#### सहाय्या

फिजी के उत्पादक एनएसआई में  
सीखेंगे गन्ना उत्पादन का हुनर

मार्ड सिटी रिपोर्टर

कानपुर। फिजी के उत्पादक गन्ना उत्पादन का हुनर नेशनल सुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) से सीखेंगे। इसके साथ ही उत्पादों के विपणन के तौर-तरीकों का सबक वाणिज्यिक चीनी कारखानों में जाकर लेंगे।

सोमवार को फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी की अगुवाई में प्रगतिशील गन्ना किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल एनएसआई पहुंचा। यह प्रतिनिधिमंडल यहां कुछ दिन रुककर फार्म से फैक्टरी तक प्रक्रिया समझेगा। इसके बाद वाणिज्यिक चीनी कारखानों में जाकर मशीनीकरण को समझेगा। साथ ही गन्ना और इसकी खोई से तैयार होने वाले मूल्यवर्धित उत्पादों के संबंध में भी जानकारी लेगा।

फिजी की गन्ना उत्पादक परिषद के अनुरोध पर विदेश मंत्रालय के माध्यम से इस यात्रा का भायोजन किया गया। गन्ना उत्पादन फिजी की



फिजी प्रतिनिधिमंडल की सदस्य को पुस्तक भेंट करते एनएसआई निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन।

सबसे महत्वपूर्ण फसलों में एक है। पिछले 20 सालों में वहां उत्पादन में 50 फीसदी की गिरावट आई है। एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि खेती, कटाई, परिवहन लागत बढ़ने, कम उत्पादकता तथा भूमि पद्धति का नवीनीकरण न होने से फिजी में वर्तमान स्थिति पैदा हुई। उद्योग को टिकाऊ बनाने के लिए फिजी प्रतिनिधिमंडल को भारतीय किसान संस्थानों और उद्योग के कार्यों को दिखाएंगे।

# फिजी प्रतिनिधि मंडल टीम ने एन एस आई का दौरा किया

संचादाता

कानपुर। फिजी से गजा उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रगतिशील गजा किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गति के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो साथ के अध्ययन दौरे पर गांगूली शक्ति संस्थान, कानपुर पहुंचा। चौरों और चौरी उत्पादन गांनी खेत से कारबखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उत्तापन गए नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चौरी कारखाने और इथेनैल संवेदन के संचालन के देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए गांगूली शक्ति

संस्थान, कानपुर में रुकेगी यह यात्रा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गजा उत्पादक परिषद, फिजी के अध्येत्री पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है। गजा फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण मंडलों में से एक है और एक सटी से भी अधिक समय से इहने देश की अधिकारियत के विकास को आकार दिया है। हालांकि, पिछले 20 वर्षों से, गजा और चौरी दोनों के उत्पादन में लगातार लगभग 50 और चौरी उत्पादन गांनी खेत से कारबखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उत्तापन गए नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चौरी कारखाने और इथेनैल संवेदन के संचालन के देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए गांगूली शक्ति

है। हम उन्हें चौरी उद्योग को टिकाक बनाने के लिए भारतीय किसानों, संस्थानों और उद्योग द्वारा किया जा रहे हैं। हम उन्हें विभिन्न उत्पादक के विकास, और उत्पादन, रोपण तकनीक, सिंचाई प्रणाली, रोपण और कौटुम्बन, कृषि मर्मानीकरण पर सैद्धांतिक और व्यवहारिक जानकारी प्रदान करने जा रहे हैं और महत्वपूर्ण रूप से इच्छित परिपक्वता पर गति की कटाई और पेंड्रें देशी में कटाई को कम करने के बारे में सुनना प्रायोगिक चौरी के उत्पादन पर जानकारी प्रदान करें। निवेशक ने बताया कि बेहतर गुणवत्ता वाली चौरी का उत्पादन करने के लिए प्रसंस्करण में नवीनतम तकनीक और मूल्य वर्धित उत्पादन बनाने के लिए सह-उत्पादनों के उपयोग के बारे

में भी उन्हें जानकारी दी जाएगी। अंग्रेजीकृत स्वयंगत और निवेशक प्रोफेसर मोहन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डॉ. स्वेन, प्रोफेसर शुभर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी गई। डॉ. सीमा पोहा, प्रोफेसर वायोकैमिस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि संस्थान विज्ञान ने क्रमशः चौरी-इथेनैल परिपूर्ण और गति की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटीविटव सम्बोधन की गयी। गांगूली शक्ति संस्थान का एकमात्र दीरा पूरा करने के बाद, संस्थान के विभिन्न प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न वायोजित चौरी कारखानों, नई गता किसानों के विकास में शामिल संस्थानों, मर्मानी निर्माताओं का



दीरा करेंगे। प्रतिनिधिमंडल सिंचाई के पाने, उत्पादकों और कौटनालाकों के न्यूनतम इन्स्ट्रुक्ट के साथ भवति को उपज में सुधार के लिए किया गए उपायों के संबंध में जपानी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्रमिशील किसानों के साथ भी बातचीत करेगा।

## Digital News

- प्रगतिशील गन्ना किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल पहुंचा राष्ट्रीय शक्ति स्थान
- राष्ट्रीय शक्ति संस्थान कानपुर में फिजी के गन्ना उत्पादक का 18 सदस्य प्रतिनिधि मंडल कानपुर पहुंचा
- फिजी की 18 सदस्य टीम पहुंची एन, एस, आई